अध्याय 47.
कर्म

1. **कर्म किसे कहते हैं ?**
   जिसके द्वारा आत्मा परतंत्र किया जाता है, उसे कर्म कहते हैं।
2. **कर्म कितने प्रकार के होते हैं ?**
   कर्म आठ प्रकार के होते हैं–
   1. **ज्ञानावरण कर्म** – जो आत्मा के ज्ञान गुण को ढकता है, वह ज्ञानावरण कर्म है।
   2. **दर्शनावरण कर्म** – जो आत्मा के दर्शन गुण को ढकता है, वह दर्शनावरण कर्म है।
   3. **वेदनीय कर्म** – जो सुख–दुःख का वेदन (अनुभूति) कराता है, वह वेदनीय कर्म है।
   4. **मोहनीय कर्म**– जो आत्मा के सम्यक्त्व और चारित्र गुण को घातता है, वह मोहनीय कर्म है।
   5. **आयु कर्म** – जो प्राणी को मनुष्य आदि के शरीर में रोके रखता है, वह आयु कर्म है।
   6. **नाम कर्म** – जो अच्छे–बुरे शरीर की संरचना करता है, वह नाम कर्म है।
   7. **गोत्र कर्म** – जिस कर्म के उदय से जीव को नीच व उच्च गोत्र की प्राप्ति होती है, वह गोत्र कर्म है।
   8. **अंतराय कर्म** – जो दान, लाभ, भोग, उपभोग एवं वीर्य में विघ्न डालता है, वह अंतराय कर्म है।
3. **आठ कर्मों के कार्यों को दर्शाने के लिए कौन–कौन से उदाहरण दिए गए हैं ?**
   आठ कर्मों के कार्यों को दर्शाने के लिए निम्न उदाहरण दिए गए हैं–

ज्ञानावरण कर्म	–	देवता के मुख पर ढके वस्त्र के समान।
दर्शनावरण कर्म	–	द्वारपाल के समान।
वेदनीय कर्म	–	शक्कर की चाशनी से लपेटी तलवार के समान।
मोहनीय कर्म	–	मदिरा के समान।
आयु कर्म	–	बेड़ी के समान।
नाम कर्म	–	चित्रकार (पेंटर) के समान।
गोत्र कर्म	–	कुम्भकार के समान।
अन्तराय कर्म	–	भण्डारी के समान।

4. **इन आठ कर्मों में कितने घातिया और कितने अघातिया हैं ?**
   घातिया कर्म भी चार हैं एवं अघातिया कर्म भी चार हैं –
   1. **घातिया कर्म**–जो जीव के अनुजीवी गुणों को घातते हैं, वे घातिया कर्म हैं। वे चार हैं:–ज्ञानावरण कर्म, दर्शनावरण कर्म, मोहनीय कर्म और अन्तराय कर्म।
   2. **अघातिया कर्म** – जो जीव के प्रतिजीवी गुणों का घात करते हैं, वे अघातिया कर्म हैं। वे चार हैं :– वेदनीय कर्म, आयु कर्म, नाम कर्म और गोत्र कर्म।

5. ज्ञानावरण कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

ज्ञानावरण कर्म का बंध निम्न कारणों से होता है -

1. शिक्षा गुरु का नाम छिपाना।
2. किसी के अध्ययन में बाधा डालना जैसे-बिजली बंद कर देना, पुस्तक फाड़ देना, पुस्तक की चोरी करना आदि।
3. किसी के ज्ञान की महिमा को सुनने के बाद मुख से कुछ न कहकर अंतरंग में ईर्ष्याभाव रखना।
4. ज्ञान के साधनों का दुरुपयोग करना।
5. किसी कारण से मैं नहीं जानता ऐसा कहकर ज्ञान का न देना।
6. ज्ञान होने पर भी ईर्ष्या के कारण ज्ञान न देना।
7. दूसरे के द्वारा प्रकाशित ज्ञान को रोकना। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/10)
8. शास्त्र विक्रय करना आदि कारणों से ज्ञानावरण कर्म का बंध होता है। (रा.वा., 6/10/20)

6. दर्शनावरण कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

दर्शनावरण कर्म का बंध निम्न कारणों से होता है -दर्शन मात्सर्य, दर्शन अन्तराय, आँखें फोड़ना, इन्द्रियों के विपरीत प्रवृत्ति, दृष्टि का गर्व, दीर्घ निद्रा, दिन में सोना, आलस्य, नास्तिकता, सम्यग्दृष्टि में दूषण लगाना, कुतीर्थ की प्रशंसा, हिंसा करना और यतिजनों के प्रति ग्लानि का भाव आदि दर्शनावरण कर्म के बंध के कारण हैं। (राजवार्तिक, 6/10/20)

7. वेदनीय कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

वेदनीय कर्म का बंध निम्न कारणों से होता है -अपने में, दूसरे में, या दोनों में विद्यमान दु:ख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध और परिदेवन आदि असाता वेदनीय कर्म के बंध के कारण हैं तथा सभी प्राणियों पर अनुकम्पा रखने से, व्रतियों की सेवा से, दान देने से, सराग संयम, देशसंयम, बालतप, हृदय में शान्ति रखने से और लोभ का त्याग करने से, साता वेदनीय का बंध होता है। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/11-12)

8. मोहनीय कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

मोहनीय कर्म का बंध निम्न कारणों से होता है -केवली भगवान्, श्रुत, संघ,धर्म एवं देवों में झूठे दोष लगाने से दर्शनमोहनीय अर्थात् मिथ्यात्व का बंध होता है तथा कषायों की तीव्रता से, किसी को चारित्र लेने से रोकने में, चारित्र से भ्रष्ट करने आदि से चारित्र मोहनीय का बंध होता है। (त.सू., 6/13-14)

9. आयु कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

आयु कर्म का बंध निम्न कारणों से होता है -

1. **नरकायु**- बहुत आरम्भ एवं बहुत परिग्रह से। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/15)
2. **तिर्यञ्चायु** - मायाचारी, अतिसंधान, विश्वासघात, विपरीत मार्ग का उपदेश देने से, किसी का कर्ज न चुकाने आदि से। (सर्वार्थसिद्धि, 6/16/640)
3. **मनुष्यायु** - स्वभाव से मृदुस्वभावी हो, पात्रदान में प्रीति युक्त हो, अल्प आरम्भ, अल्प परिग्रह वाला हो आदि से। (राजवार्तिक, 6/17)

4. **देवायु** - संयम पालन करने से, कषाय की मंदता से, दान देने से, तीर्थों की सेवा से, अकामनिर्जरा, बालतप आदि से। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/20)

10. नाम कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

नाम कर्म के बंध के निम्न कारण हैं -मन, वचन, काय की कुटिलता अर्थात् सोचना कुछ, बोलना कुछ और करना कुछ, चुगलखोरी, चित्त की अस्थिरता, झूठे मापतौल का प्रयोग करने से, किसी को धोखा देने से, अशुभ नाम कर्म का बंध होता है। (राजवार्तिक, 6/22/1-4)

इसके विपरीत मन, वचन, काय की सरलता, चुगलखोरी का त्याग,चित्त की स्थिरता आदि से शुभ नाम कर्म का बंध होता है तथा सोलहकारण भावना से तीर्थङ्कर शुभ नाम कर्म का बन्ध होता है। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/23)

11. गोत्र कर्म बंध का किन-किन कारणों से होता है ?

गोत्र कर्म के बंध के निम्न कारण हैं -परनिंदा, आत्म प्रशंसा, दूसरे के विद्यमान गुणों को ढकना तथा अपने अविद्यमान गुणों को प्रकट करना, अरिहंत आदि में भक्ति का न होना आदि से नीच गोत्र का बंध होता है तथा इससे विपरीत अपनी निंदा, दूसरे की प्रशंसा, अपने गुणों का आच्छादन (ढकना) तथा पर के गुणों का उद्भावन (प्रकट) करना, अरिहंत आदि में भक्ति युक्त होना, आदि से उच्च गोत्र का बंध होता है। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/25-26)

12. अन्तराय कर्म का बंध किन-किन कारणों से होता है ?

अन्तराय कर्म के बंध के निम्न कारण हैं -दान आदि में बाधा उपस्थित करने से, जिन पूजा का निषेध करने से, निर्माल्य द्रव्य का सेवन करने से तथा अपनी शक्ति को छिपाने से अंतराय कर्म का बंध होता है। (तत्त्वार्थसूत्र, 6/27)

13. द्रव्य कर्म, भावकर्म एवं नोकर्म किसे कहते हैं ?

1. **द्रव्य कर्म** - पुद्गल पिण्ड को द्रव्य कर्म कहते हैं। (कर्मकाण्ड, 6) या सब शरीरों की उत्पत्ति के मूल कारण कार्मण शरीर को कर्म (द्रव्य कर्म) कहते हैं। (राजवार्तिक, 2/25/3)
2. **भाव कर्म** - पुद्गल पिण्ड में जो फल देने की शक्ति है वह भाव कर्म है (कर्मकाण्ड, 6)अथवा राग-द्वेष आदि परिणामों को भाव कर्म कहते हैं।
3. **नोकर्म** - औदारिक, वैक्रियिक , आहारक और तैजस नामकर्म के उदय से चार प्रकार के शरीर होते हैं। वे नोकर्म शरीर हैं। पाँचवां जो कार्माण शरीर है, वह तो कर्म रूप ही है। (जी.का.,244)

14. ज्ञानावरणादि कर्म क्या कहते हैं ?

1. **ज्ञानावरण कर्म**- ज्ञानावरण कर्म कहता है कि मैंने बाहुबली जैसे महापराक्रमी को एक वर्ष तक खड़ा रखा केवलज्ञान नहीं होने दिया।
2. **दर्शनावरण कर्म** - दर्शनावरण कर्म कहता है मैंने यथाख्यात चारित्र वाले को भी आत्मा का दर्शन नहीं होने दिया और उसे नरक निगोद की यात्रा पुनः करा दी।
3. **वेदनीय कर्म** - वेदनीय कर्म कहता है मैंने सनतकुमार मुनिराज के शरीर में सात सौ वर्ष तक कुष्ठ रोग कराया। मुनि वादिराज के शरीर में सौ वर्ष तक कुष्ठ रोग कराया। श्रीपाल जैसे कोटिभट्ट को

कोढ़ी बनाकर निकलवाया।

4. **मोहनीय कर्म**- मोहनीय कर्म कहता है मैंने राम जैसे महान् पुरुष को लक्ष्मण के मृतक शरीर को लेकर 6 माह तक कंधे पर रखकर घुमवाया। सीता की जङ्गलों-जङ्गलों में खोज कराई। उपशम श्रेणी तक के मुनिराज को भी प्रथम गुणस्थान में भिजवाया।
5. **आयु कर्म**-आयु कर्म कहता है मैंने राजाश्रेणिक जैसे क्षायिक सम्यग्दृष्टि को एवं रावण, सुभौमचक्रवर्ती आदि जीवों को भी नरक में रोक रखा है।
6. **नाम कर्म** - नाम कर्म कहता है, मैंने अनेक को गूँगा, कुबड़ा, काला, अष्टावक्र (आठ अङ्ग टेड़े) बनाया ।
7. **गोत्र कर्म** - गोत्र कर्म कहता है, मैंने बहुतों को ऊँच-नीच कुल में डाला।
8. **अंतराय कर्म** - अंतराय कर्म कहता है, मैंने आदिनाथ मुनि को 7 माह 9 दिन तक आहार नहीं मिलने दिया।

15. एक जीव के कितने कर्मों का उदय होता है ?

प्रथम गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक आठों कर्मों का तथा ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म के अलावा सात कर्मों का एवं तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में चार कर्मों का उदय रहता है।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. चींटी के पास आठ कर्म हैं।
2. जल के पास आठ कर्म नहीं हैं।
3. शास्त्र विक्रय से ज्ञानावरण कर्म का बंध होता है।
4. अंतराय कर्म कहता है मैंने आदिनाथ मुनि को 9 माह 7 दिन तक आहार नहीं मिलने दिया।
5. मोहनीय कर्म का उदाहरण बेड़ी के समान है।
6. ज्ञानावरण कर्म का उदाहरण भण्डारी के समान नहीं है।
7. गोत्र कर्म का उदाहरण पेन्टर के समान है।
8. दिन में शयन करने से दर्शनावरण कर्म का बंध होता है।
9. चारित्र लेने से रोकने में दर्शन मोहनीय कर्म का बंध होता है।
10. मोहनीय कर्म कहता है मैंने सीताजी की जङ्गलों - जङ्गलों में खोज कराई।

अन्यत्र खोजिए -

1. आठ कर्म की प्रकृतियाँ कितनी हैं ?
2. मुनिराज को आपके यहाँ अंतराय आया तो आपके और महाराज के कौन से अंतराय कर्म का उदय था ?
3. औदारिक आदि चार शरीरों की '' नोकर्म'' संज्ञा क्यों है ?
4. किस गति में किन-किन गोत्रों का उदय रहता है ?